

मुरया दरबार

चर्चा में क्यों?

17 अक्टूबर, 2021 को मुख्यमंत्री भूपेश बघेल वशिव प्रसिद्ध ऐतिहासिक बस्तर दशहरा के तहत सरिहासाार में आयोजित 'मुरया दरबार' में शामिल हुए तथा जनप्रतिनिधियों द्वारा की गई माँगों को पूरा करते हुए विभिन्न घोषणाएँ कीं।

प्रमुख बिंदु

- मुरया दरबार में शामिल होने के लिये सरिहासाार पहुँचने पर मुख्यमंत्री भूपेश बघेल का स्वागत मांझी-चालकियों द्वारा पारंपरिक पगड़ी पहनाकर किया गया।
- इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने टेंपल कमेटी के लिये एक लपिकि और एक भृत्य की भरती की घोषणा करने के साथ ही यहाँ स्थिति शासकीय इंजीनियरिंग महाविद्यालय का नामकरण वीर झाड़ा सरिहा के नाम पर करने की घोषणा की। उन्होंने दंतेश्वरी मंदिर में आधुनिक ज्योतिकक्ष के निर्माण की घोषणा भी की।
- बस्तर में मुरया दरबार की शुरुआत 8 मार्च, 1876 को हुई थी, जिसमें सरिँचा के डपिटी कमिश्नर मेक जार्ज ने मांझी-चालकियों को संबोधित किया था। बाद में लोगों की सुविधा के अनुरूप इसे बस्तर दशहरा का अभिन्न अंग बनाया गया, जो परंपरानुसार 145 साल से जारी है।
- उल्लेखनीय है कि बस्तर रियासत द्वारा अपने राज्य में परगना स्थापित कर यहाँ के मूल आदिवासियों से मांझी (मुखिया) नियुक्त किया गया था, जो अपने क्षेत्र की हर बात राजा तक पहुँचाया करते थे, वहीं राजाजुआ से ग्रामीणों को अवगत भी कराते थे। मुरया दरबार में राजा द्वारा निर्धारित 80 परगना के मांझी ही उन्हें अपने क्षेत्र की समस्याओं से अवगत कराते हैं।
- मुरया दरबार में पहले राजा और रियासत के अधिकारी कर्मचारी मांझियों की बातें सुना करते थे और तत्कालीन प्रशासन से उन्हें हल कराने की पहल होती थी। आज़ादी के बाद मुरया दरबार का स्वरूप बदल गया। 1947 के बाद राजा के साथ जनप्रतिनिधि भी इसमें शामिल होने लगे।
- 1965 के पूर्व बस्तर महाराजा स्व. प्रवीर चंद्र भंजदेव दरबार की अध्यक्षता करते रहे। उनके निधन के बाद राज परिवार के सदस्यों मुरया दरबार में आना बंद कर दिया था। वर्ष 2015 से राज परिवार के कमलचंद्र भंजदेव इस दरबार में शामिल हो रहे हैं।
- बस्तर के मुरया दरबार में अब बस्तर संभाग के निवाचित जन-प्रतिनिधि और वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहते हैं। वे ग्रामीणों से आवेदन लेते हैं। मांझी, चालकी और मेंबर-मेंबरीन इनके सामने ही अपनी समस्या रखते हैं। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भी 2009 -10 से लगभग हर मुरया दरबार में शामिल हो रहे हैं।